प्रातःक्लास 16-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चे जानते हैं कि रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। रूहानी बाप हुआ बेहद का बाप। रूहानी बच्चे भी हुये बेहद के बच्चे। बाप को तो सभी बच्चों की सदगति करनी है। किस द्वारा? इन बच्चों द्वारा विश्व की सदगति करनी है। सारे विश्व के बच्चे तो नहीं पढ़ते हैं। नाम तो है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। मुक्ति तो सभी को होती ही है। मुक्ति कहो जीवनमुक्ति कहो। मुक्ति में जाकर फिर जीवन मुक्ति में आना ही है। तो ऐसे ही कहेंगे सभी जीवनमुक्ति में आते हैं। बाप शान्तिधाम। एक दो पीछे आना ही है पार्ट बजाने। तब तक मुक्तिधाम में ठहरना पड़ता है। बच्चों को अभी रचयिता और रचना का पता पड़ गया है। यह सारी रचना अनादी है। रचयिता तो एक ही बाप है। यह जो सभी आत्माएं हैं सभी बेहद के बाप बच्चे हैं। जब बच्चों को मालूम पड़ता है तो दोनो ही आकर योग सीखते हैं। सभी तो नहीं सीखते हैं। यह भारत में के लिए ही योग है। बाप आते भी भारत में हैं। भारत को ही याद की यात्रा सिखलाये पावन बनाते हैं। और नालेज भी देते हैं कि यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह भी बच्चे जानते हैं रुद्र माला भी है। जो गाई और पूजी जाती है। सुमिरण की जाती है। भक्त माला भी है। ऊंच ते ऊंच भक्तों की माला है। है तो सारी भक्ति माला। रावण की माला भक्ति की माला। रावण जभी आते हैं तभी ही सभी विकारों में जाते हैं। कोई काम विकार में जास्ती जाते हैं कोई कम। कोई विकार में नहीं जाते परन्तु विकार से पैदा तो होते हैं ना। तो कहेंगे यह है रावण की माला। इस कल्प के संगम युग के पहले जो भी है सभी है रावण माला। उसमें फिर भक्त माल भी है। भक्ति माला बाद फिर होनी चाहिए ज्ञान की माला। भक्ति और ज्ञान है ना। भक्तिमाल भी है। पीछे फिर रुद्र माला भी कहा जाता है। क्योंकि ऊंच ते ऊंच मनुष्यसृष्टि में है विष्णु। जिसको सूक्ष्म वतन में दिखाते हैं। ल०ना० राज्य तो यहां ही करते हैं। तो कहेंगे विष्णु की रुद्र माला भी है। प्रजापिता ब्रहमा तो यह है। उनकी भी माला जरूर है। आखीरीन यह माला बन जावेगी तब ही वह विष्णु की माला रुद्र माला बनेगी। ऊंच ते ऊंच है शिव बाबा। फिर ऊंच ते ऊंच है विष्णु का राज्य। यह त्रिमूर्ति जो दिखाया जाता है उसमें वास्तव में होना चाहिए ब्रहमा विष्णु और शिव। न कि शंकर। परन्तु बाजू में शिव को कैसे रखे तो फिर शंकर को रख दिया है। और शिव को ऊंपर में रखा है। इससे शोभा भी अच्छी होती है। सिर्फ दो से शोभा न हो। नहीं तो वास्तव में शंकर का कोई पार्ट है नहीं। शंकर की माला नहीं कहेंगे। ब्रहमा विष्णु की और रुद्र माला। बस। शंकर की कोई माला नहीं। जैसे कि उनका पार्ट ही नहीं। शोभा के लिए भक्ति मार्ग के कितने चित्र आद बनाये हैं। ज्ञान तो कुछ भी नहीं जानते। तुम जो चित्र बनाते हो उनकी पहचान देनी है तो मनुष्य समझ जाये। शिव शंकर को मिला देते हैं तो जैसे किउनका पार्ट है नहीं। यूं तो बाबा ने समझाया है सूक्ष्मवतन भी सारी सा० की बातें हैं। वहां तो कोई रह न सके। हड्डी मास तो वहां होता नहीं। सा० करते हैं। सम्पूर्ण ब्रहमा भी है। परन्तु वह है सम्पूर्ण अव्यक्त। अभी व्यक्त ब्रहमा जो है उनको अव्यक्त बनना है। यह भी समझ में आता है। जिसको फरिश्ते भी कहते हैं। कहेंगे अव्यक्त फरिश्ते भी देखें। तो सूक्ष्मवतन में चित्र रख दिये हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में कोई रह नहीं सकता। कुछ है नहीं। तुम सूक्ष्म वतन में जाते हो कहते हो सोमी रस पिलाया। अभी वहां तो भाड़ होती नहीं। बैकुण्ठ में हो सकती है। ऐसे भी नहीं बैकुण्ठ से ले आकर पिलाते होंगे। सभी सूक्ष्मवतन कासा० है। और कुछ है नहीं। समझो कोई का हनुमान गणेश आद सा० होता है: जो चित्र हैं उसका सा० होता है बाकी ऐसे कोई गणेश हाथी मिशल आद है नहीं। भक्तिमार्ग में यह सभी जैसे खिलोने बनाये दिये हैं। तुम बच्चे तो जानते हो अभी हमको वापस जाना है। और इस में आत्मअभिमानी भी बनाया जाता है। हम आत्मा अविनाशी हैं। आत्मा का भी ज्ञान बच्चों में है। परन्तु आत्मा क्या है वह नहीं जानते। आत्मा ही एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। परन्तु आत्मा क्या है, कैसे उनमें 84 का पार्ट भरा हुआ है यह कुछ भी नहीं जानते।

यह नालेज बाप ही देते हैं। अपनी भी नालेज देते हैं। आत्मा का भी नालेज देते हैं। अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है जरूर। तुम यही कोशिश करते रहेंगे हम आत्मा हैं। अभी परमात्मा के साथ योग लगाना है। सर्व शक्तिवान पतित-पावन एक को ही कहते हैं। सन्यासी भी कहते हैं हे पतितपावन आओ। परन्तु समझते कुछ भी नहीं। कोई तो ब्रह्म को भी पतित पावन कह देते हैं। भक्ति मार्ग में सभी अनराईटियस बन जाते हैं। भक्ति का भी ज्ञान नहीं है। अभी तुम बच्चों को भक्ति का ज्ञान मिला है। भक्ति कितना समय चलती है ज्ञान कितना समय चलता है यह बाप बैठ समझाते हैं। पहले2 तो कुछ भी नहीं जानते थे। गोया तुच्छ बुधि थे। किसकी तुच्छ बुधि कहेंगे? जनावरों की भी तो बुधि तो है ना। परन्तु मनुष्य होकर और तुच्छ बुधि बन पड़ते हैं तो जनावर से भी बदतर कहा जाता है। सतयुग में बिलकुल ही स्वच्छ बुधि थे। कितने उन्हों में देवी गुण थे। दैवी गुण भी जरूर धारण करनी है। कहते हैं यह तो जैसे देवता है। भल साधू सन्त आद को अक्सर कर के मनुष्य लोग मानते हैं परन्तु वह देवी बुधि तो नहीं हैं। रजोगुणी बुधि कहेंगे। राजा रानी और प्रजा है ना। राजधानी कब और कैसे स्थापन होती है यह दुनिया नहीं जानती हैं। यहां तुम सभी नई बातें सुनते हो।

तो माला का भी राज़ समझाया। ऊंच ते ऊंच है बाप। उनकी माला। ऊपर में है रुद्र। वह है निराकार फिर साकार ल०ना० उनकी भी माला है। ब्राह्मणों की माला अभी बनती नहीं। अन्त में तो ब्राह्मणों की भी बन जाती है। जो फिर रुद्र की माला और रुण्ड माला बनती है। इन बातों में जाती प्रश्न उत्तर करने की भी जरूर दरकार नहीं। पहले मूल बात है अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा बाप को याद करना। अनेक प्रकार के नालेज है। फिर भी बाप कहते हैं इन बातों में जाती नहीं जाना है। तुम सिर्फ बाप को याद करो। यह निश्चय पक्का चाहिए। मूल बात है पतितों को पावन बनाना। मूल वतन में भी पावन है। तो सुखधाम में भी पावन है। तुम पावन बन कर और पावन दुनिया में जाते हो। गोया पावन दुनिया की स्थापना हो रही है। सभी ड्रामा मे नूंध है। बहुत प्रश्नों आद की बात ही नहीं। तुम लोगों को क्रिश्चन वा बौधियों आद की नालेज तो चाहिए नहीं। उनके नालेज से इतना कोई सुख वा ऊंच पद नहीं पा सकते हैं। इसलिए बाप कहते हैं और सीमीधर्मों की बातों को छोड़ दो। मुख्य बात है यह। जिससे फायदा होता है। कोई भी प्रश्न आद नहीं निकालना चाहिए। जो जितना पढ़ते हैं उतना ऊंच पद पाते हैं। बाप कहते हैं सारे दिन का पोतामेल देखो। कोई भूल तो नहीं हुई। व्यापारी लोग मुरादों सम्भालते हैं। यह भी कमाई है। तुम हरेक व्यापारी हो। बाबा से व्यापार करते हैं। हो। अपनी जांच करनी है हमारे में कितने दैवी गुण है। कितना बाप को याद करते हैं। कितना हम अशरीरी बन जाते हैं। हम नंगे आये थे फिर नंगे ही जाना है। सभी आते रहते हैं। बीच में जाना तो एक को भी नहीं है। जाना सभी को इकट्ठा ही है। भल भू सृष्टि खाली तो नहीं रहती है गायन है ना राम गयो रावण गयो ... परन्तु रहते तो दोनों ही हैं ना। रावण सम्प्रदाय जाते हैं तो फिर लौट नहीं आते हैं। बाकी यह बच जाते हैं। यह भी तुमको आगे चल कर ना० होना है। यह जानना है नई दुनिया की कैसे स्थापना होती है। पिछाड़ी में क्या होगा। फिर सिर्फ हमारा ही धर्म रह जावेगा। सतयुग में तुम राज्य करेंगे। कलियुग खत्म हो जावेगा। फिर सतयुग को आना है। अभी राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय दोनों ही है। संगम युग पर ही यह सभी होते हैं। अभी तुम सभी को जानते हो। बाप कहते हैं बाकी जो कुछ राज़ है वह आगे चल करपीर2 समझाते रहेंगे। बाप कहते हैं मैं भी तो हूं ना। जो रिकार्ड में नूंध है वह खुलती जावेगी। तुम समझते जावेंगे। तुम समझते जावेंगे। इन एडवान्स कुछ नहीं बतावेंगे। तुम देवताएं बनते हो तो आसुरी सृष्टि का जरूर विनाश होगा। विनाशभी होने का है। कब होगा यह बाबानहीं बतावेंगे। उनको मालूम हो तो बतावे। बाबा को यह ज्ञान नहीं कि विनाश कैसे होगा। यह तो ड्रामा का प्लेन है। रिकार्ड खुलता जाता है। बाबा

बोलता जाता है। तुम्हारी बुधि में सभी बातों की समझ पड़ती जाती है। रिकार्ड है ना। जैसे2 रिकार्ड बजता जावेगा वैसे2 बाबा की मुरली चलती जावेगी। ड्रामा का राज़ सारा अन्दर में है। ऐसे नहीं कि रिकार्ड से ऐसे उठायेबीच में रख वह रिपीट करावेंगे। नहीं। वह फिर भी वही रिपीट होगा। नई बात नहीं। बाबा के पास जो नई2 पायन्ट होगा वह रिपीटहोगी। तुमसुनते और सुनाते जावेंगे। बाकी तो सभी है गुप्त। यह राजधानी स्थापन हो रही है। अलग2 राजाई में तुम जन्म लेंगे। राजा रानी प्रजा सभी चाहिए ना। यह यही बुधि से काम लेना पड़ता है। प्रैक्टीकल में जो होगा सो देखा जावेगा। परन्तु बुधि कहती है रत्नों को तो बचना ही है। किस घर में भी हैं बचते तो हैं ना। कोईकहेंगे गोल्डेन स्पून इन माउथ, ऐसे तो बहुत ही शाहुकार हैं, सो तो यहां से बहुत शाहुकार पास जाकर जन्मलेते हैं। अभी तुम्हारी वहां बहुत खातरी होगी। रत्न जड़ित चीज़ सभी के पास होते हैं। उनमें तो इतनी पावर नहीं है। पावर तुम्हारे में है। तुम जहां भी जावेंगे वहां अपना राज करेंगे। तुम तो ऊंच बनते हो ना। तो तुम जाकर देवी चरित्र दिखावेंगे। आसुरी बच्चे जन्म से ही रोते रहते हैं। गन्दे भी होते हैं। तुम तो बहुत ही कायदे सिरे निपजेंगे। गन्द आद की कोई बात ही नहीं। आजकल के बच्चे तो कितने गंदे हो पड़ते हैं। सतयुग में तो ऐसी बात हो न सके। फिर भी हैविन है ना। गन्दगी की बात होती नहीं। यह तो खुशी की बात है ना। हम ऐसी दुनिया में जाते हैं जहां यह गंदगी की बांस आद नहीं होती। वहां ऐसे भी नहीं कहेंगे कि अगरबत्ती जलाओ। बांस होगी ही नहीं। जो अगर बत्ती की दरकार रहे। बगीचे में ऐसी खुशबूदार फूल होंगे जो बात मत पूछो। यहां के फूलों में इतनी ताकत नहीं है ऐसी खुशबूदार देने की। वहां तो हरेक चीज़ में खुशबूदार रहती है। उनके भेंट में यहां तो 1% खुशबूदार है। वहां है 100%। अगर बत्ती भी फूलसे बनती है ना। वहां फूल ही बड़े फर्स्ट क्लास होंगे। फूलों में फूल खुशबूदार होती है। सब से फर्स्ट क्लास फूल सतयुग में होंगे। यहां भल कोई कितना भी शाहुकार हो पर इतना नहीं। वहां तो किसम2 की चीज़ें होंगी। बर्तन आद भी सोने के होंगे। जैसे यहां पत्थर है। वहां फिर सोना ही सोना। रेती में भी सोना होता है। बिचार करो कितना सोनाप होगा। जिस से मकान बनते होंगे। ऐसी सीढ़ियां होंगी। जो न गर्मी न ठंढी होंगी। पंखे भी बहुत होते हैं। जब गर्मी होती है। वहां तो गर्मी का दुःख ही नहीं। जो पंखे आद हों। उसका तो नाम ही है स्वर्ग। हैविन। वहां अपार सुख होते हैं। तुम्हारे जैसा पदमभाग्यशाली कोई बनते नहीं। गाना0 की कितनी महिमा गाते हैं। इन्हों को ऐसा जो बनाते हैं उनका तो पहले गायन है। पहले2 होती ही है अव्यभिचारी भक्ति। फिर पीछे देवताओ की शुरू होती है। वह भी भूत पूजा कहेंगे। शरीर तो वह है नहीं। 5तत्वों की पूजा हो जाती है। शिव बाबा के लिए तो ऐसे नहीं कहेंगे। पूजा करने लिए कोई चीज़ का सोने आद का बनावेंगे। आत्माको थोड़े ही सोना कहेंगे। आत्मा किस चीज़ से बनी है। शिव का चित्र किस चीज़ से बनाया है झट बता देंगे। आत्मा, परमात्मा किस चीज़ से बना हुआ है वहकोई बता न सके। सतयुग में 5 तत्व भी शुद्ध होते हैं। यहां है अशुद्ध। तो पुरुषार्थी बच्चे ऐसे खयाल करते रहेंगे। बाबा कहते हैं इन बातों को भी छोड़ दो। जो होना है सो होगा। पहले तुम बाप को याद करो। चारों तरफ बुधि के योग हटाकर मामेकं याद करो विकर्म विनाश होंगे। जो भी सुनते हो वह सभी बातें छोड़ कर एक बाप पक्की करो। यह भी भल समझो। परन्तु पहले तो सतोप्रधान बनो तो बनो। फिर सतयुग में तो कल्प2 होता है बड़ी होगा। उस में फर्क नहीं पड़ सकता। मूल बात है बाप को याद करना। यह है मेहनत। वह तो पूरी करो। तूफान भी बहुत आते हैं। जन्म जन्मान्तर जो कुछ किया है वह सामने आवेंगे। तो सभी तरफसे बुधि योग हटा देना है। कोई भी तूफान आये उनको हटा कर मेरे को याद करने का पुरुषार्थ करो अन्तर्मुख होकर। स्मृति तो आती है बच्चों को। सो तो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस करने करने वालों को सर्विस की खुशी रहती है। जो अच्छी सर्विस करते हैं। उनके सर्विस का सबूत भी मिलता है।

पण्डे बन कितने चक्र को ले आते हैं। जो ऐसे सर्विस करते हैं। उनको सरोवस वाइ शौक सबुत भी मिलता है। पण्डे बन कितने को ले आते हैं। कौन महारथी घोड़े सवार प्यादे हैं वह झट पता पड़ जाता है। आपस में महारथी बैठते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। डिबेट करते हैं। बाबा को जो समझाना है उस पर तो डिबेट कर न सकें। जो समझा चुके हैं उस पर ही तुम्हारी रूह-रूहानी चलती है। बात तो बड़ी सहज है। तो तुमको डिफीकल्ट लगती है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने की डिफीकल्टी है। कहते हैं बाबा माया योग तोड़ देती है। इसमें ही मेहनत है। मामेकं याद करो बस। यह है याद की यात्रा का सीढ़ी। सीढ़ी तो बहुत प्रकार के होते हैं। बच्चे जानते हैं हमारी आत्मा सम्पूर्ण पवित्र हो जावेगी। तो चले जावेंगे जिसको बरात कहा जाता है। आपस में हम भाई2 हैं। भाई बहिन भी नहीं। कितने आपस में भाई2 हैं। फिर सतयुग में कितने थोड़े रहेंगे। तो पार्ट बजावेंगे। भाई2 का अर्थ भी तुम्हारे बुधि में है। मनुष्यों को यह समझ नहीं है कि भाई किसको कहा जाता है। तुम अभी सीख रहे हो। हम वास्तव में भाई2 हैं। आत्मायें आकर पार्ट बजाती हैं। बाप ने अपना परिचय और रचना का परिचय समझाया है। और कोई समझा न सके। न जानते ही हैं। तुम्हारी बुधि में रहता है। नालेज मिलती रहती है। टीचर है ही नालेज देने वाला। भक्ति मार्ग में समझते थे क्या बाप टीचर है, क्या नालेज सिखावेंगे। न टीचर की बात न नालेज की बात। दन्तकथायें सुनते थे। अभी प्रेक्टीकल में तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। आदी सनातन देवी देवता बनने का। तुमको अथाह सुख है। बाप ने कहा है तुम्हारा आदी सनातन देवी देवता धर्म अथाह सुख देने वाला है। शान्तिधाम तो बहुत ही करते हैं। उनकी कोई महिमा नहीं है। निराकारी दुनिया है। वहां तो कोई पार्ट नहीं। पार्ट यहां ही मिलता है। राज्य लेना और गंवाना। तुम राज्य लेते हो। तब ही तुमको महावीर कहा जाता है। महावीर मिशल अचल अडोल रहना है। वह अवस्था हो जावेगी फिर तो कितने भी तूफान आवेंगे तुम हिलेंगे नहीं। सो भी जो पक्के महावीर होंगे। क्या ही अच्छा किमती ज्ञान है। इनकी कोई कीमत नहीं लगा सके। हां खुशी का पारा ज्ञान से चढ़ता है। आत्मा को बड़ा सुख आता है। बाबा मिला है। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। फिर हम शान्तिधाम सुखधाम में चले जावेंगे। सारा दिन बुधि में यही चलना है। यह तो बुधि में आता है। राजा बनते हैं तो जरूर अच्छे कर्म किये हैं। अभी तुम समझते हो वह रावण उल्टी कर्म कराते हैं। ईश्वर यह कर्म कराते हैं जिस से तुम कितना ऊंचा बनते हो। उनको रावण मत कहा जाता है। एक दो को कहते भी हैं तुम तो असुर हो। रावण हो। वही तो ऐसे कहते नहीं। अभी तुम बच्चों को दोनो तरफ का भी ज्ञान है। वहां तो एक ही प्रारब्ध होगी। न ज्ञान की बात न भक्ति की बात। तो अभी ऐसे और बातों को छोड़ दो, क्या होगा माला कैसे बनी कितने होंगे वह बातें छोड़ दो। पहले तो मन्मनाभव। योग की मेहनत करो। सभी को यही बताओ। बाप कहते हैं मामेकं याद रखो तो मेरे द्वारा तुम सभी कुछ जान जावेंगे। और तो कोई बता भी न सके। सभी आत्मायें पार्ट में आ जाती हैं। बाकी एक बाप है जिसका फिर पार्ट ही अलग है। तुमको दुःख से छुड़ाने योग की यात्रा सिखलाने का। वह भी पार्ट बजा रहे हैं। वह कब चक्र में नहीं आते। तुम सारे चक्र को जानते हो। और सुनाते हो। कृष्ण भगवानुवाच तो है नहीं। वह तो कुछ भी जानते ही नहीं। तो मनुष्य बिचारे मुंझ कर कहां जायें। ज्ञान किसको कहा जाता है भक्ति किसको कहा जाता है यह भी अभी तुम समझते हो। भक्ति से सीढ़ी उतरे आये हो। फिर बाप आकर एकदम जोर से ऊंच चढ़ाते हैं। उसको कहा जाता है अचानक लाटरी। मनुष्य समझते हैं ईश्वरीय लाटरी है जरूर परन्तु बहुत ब्रर्ग दिखाने कारण मनुष्य अज्ञान अंधेरे में हैं। तुम को बेहद के सुख का लाटरी मिलती है। घोड़दौड़ होती है ना। यह भी आत्मा को छोड़ है। यह है हेम्युनिटी अश्व दौड़। हेयुमन भी नहीं कहें। आत्माओं की दौड़ है। स्टूडेन्ट भी होती है। तुम कहेंगे बहुत अच्छा छोड़ दौड़ता था। भाग्य के कारण स्टूडेन्ट हो गया। फरकती दे देते हैं। आत्मा फरकती देती है। बाबा बाबा कह फरकती। यह डायनेमिक देनी है। ऐसे की संग न करना है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। नमस्ते।